ISSN 2278-8808 SJIF 2015: 5.403
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

उच्च माध्यमिक स्तर पर चित्रकला शिक्षा क्यों उपयोगी है ?

प्रो. पुष्पा दुल्लर[1], प्रो. वन्दना गोस्वामी[2] & सीमा शर्मा[3]

[1]पूर्व डीन, ललित कला संकाय,वनस्थली विद्यापीठ

[2]डीन, शिक्षा संकाय वनस्थली विद्यापीठ

[3]शोध छात्रा

Abstract

किशोरावस्था जीवन की महत्वपूर्ण अवस्था है, इस अवस्था में किशोर के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांवेगिक पक्षों में क्रान्तिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। किशोरावस्था की विविध विशेषताओं को दृष्टिगत करते हुए उनके बहुमुंखी विकास हेतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को इस प्रकार संगठित करने का पयास किया गया है। समाज में आर्ट अथवा कला की बात होती है तो प्रायः चाक्षुष कला और विशेषतः चित्रकला का संदर्भ होता है। कला शब्द शिक्षित माध्यम से चित्रकला का पर्याय बन गया है। आनन्ददायी रूपों का सृजन करना चित्रकला का प्राथमिक लक्ष्य हैं। चित्रकला के छात्र के लिए जिसकी व्यक्तिगत शैली अभी अविकसित अवस्था में है। सर्जन से मिलने वाला आनन्द अब से अधिक महत्व रखता है, किन्तु जैसे ही उसकी निजी शैली उसकी प्रतिभा व प्रवृत्ति के अनुरूप परिपक्व होती हो जाती है। विद्यावती मलैया के विचारों से स्पष्ट होता है कि चित्रकला के माध्यम से बालकों की कल्पना शक्ति का विकास संभव हैं। इसके साथ ही आपने लिखा है कि विद्यालय में बालकों के लिए कला शिक्षण की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। टर्नर महोदय का विचार है कि ''मनुष्य की कोई कृति जो जनसाधारण तक को अपनी ओर आकृष्ट कर ले, कला है।'' उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चित्रकला विषय के अध्ययन द्वारा सम्पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण स्थान हो। चित्रकला विषय के शिक्षा निम्न उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं– (1) मानसिक शक्तियों का विकास, (2) बौद्धिक विकास, (3) मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग, (4) मानव संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग, (5) औद्योगिक/व्यापारिक महत्वपूर्ण, (6) जीविकोपार्जन का साधन, (7) आनन्द प्राप्ति का साधन, (8) शारीरिक शक्तियों का विकास, (9) अभिव्यक्ति का साधन, (10) व्यक्तित्व निर्माण, (11) नैतिकता का विकास, (12) रुचियों का विकास एवं (13) क्रियाशीलता।

Scholarly Research Journal's ***is licensed Based on a work at*** *www.srjis.com*

उच्च माध्यमिक स्तरीय शिक्षा देश के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। यह न केवल माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है, वरन् यह शिक्षा का महत्वपूर्ण स्तर है, जिसमें विद्यार्थी किशोरावस्था में होते हैं। किशोरावस्था जीवन की महत्वपूर्ण अवस्था है, इस अवस्था में किशोर के शारीरिक,

मानसिक, सामाजिक एवं सांवेगिक पक्षों में क्रान्तिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते है। उच्च माध्यमिक शिक्षा किशोर विद्यार्थियों को ज्ञान, अवबोध, संश्लेषण, विश्लेषण, आलोचनात्मक चिन्तन एवं मूल्यों के विकास के साथ भावी कार्य क्षेत्रों में दक्षता प्राप्त करने की ओर अग्रसर करतो है।

किशोरावस्था की विविध विशेषताओं को दृष्टिगत करते हुए उनके बहुमुंखी विकास हेतु भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा को इस प्रकार संगठित करने का प्रयास किया गया है कि इसके साथ विद्यार्थियों में उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की क्षमता, समूह का नेतृत्व करने का गुण, आदान–प्रदान की भावना समायोजन करने की दक्षता का विकास हो, साथ ही साथ उन्हें ऐस अनुभव प्रदान करना जिससे उनमें संचरित ऊर्जा सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों में निरूपित हो सकें।

समाज में आर्ट अथवा कला की बात होती है तो प्रायः चाक्षुष कला और विशेषतः चित्रकला का संदर्भ होता है। कला शब्द शिक्षित माध्यम से चित्रकला का पर्याय बन गया है। रेडियो टीवी तथा सिनेमा के माध्यम से चित्रकला, अभिनेता संगीतकार आदि को कलाकार कहा जाता है। लेकिन कला कहते ही चित्र की ओर ही ध्यान जाता है। हर्बर्ड रीड के कला शब्द को प्लास्टिक अथवा चाक्षुष कला के लिए प्रयुक्त होता गया है। कलाकृति का चरम लक्ष्य आनन्द सभी में सूक्ष्म रूप में पिरोया हुआ है। आनन्ददायी रूपों का सृजन करना चित्रकला का प्राथमिक लक्ष्य हैं। विष्णुधर्मोत्तर पुराण के तृतीय खण्ड के दो श्लोक चित्रकला के संदर्भ में उल्लेखनीय हैं –

(1) कलानां प्रवरं चित्रं धर्मकामार्थमोक्षदम्।
मंगल्य प्रथमं चैतद् गृह यत्र प्रतिष्ठितम्।।

(2) यथा सुमेरु प्रवरों नगानां यथाण्डजाना गरूड प्रधानः।
यथा नराणां प्रवरः क्षितीशस्तथा कलानामिह चित्रकल्प।।

प्रश्न यह है कि कलाओं में चित्रकला की इतनी प्रशंसा क्या की गई है ? उत्तर के लिए संक्षेप में अन्य ललित कलाओं के साथ चित्रकला को जोड़कर देखना होगा। हमारी ज्ञानेन्द्रियों के आंख सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील है। हम अपने ज्ञान का अनुभव 30 प्रतिशत आंखों के माध्यम से प्राप्त करते हैं। आंख के न होने पर किसी भी शब्द का अथ विस्तार नहीं रह जाता। कमल शब्द कहने पर आंख का जो अनुभव है वह कमल के

रूप में कल्पना में स्थापित करके उस प्रभाव को व्यंजित करता है। जिसकी अनुभूति का माध्यम आंख ही है।

चित्रकला के छात्र के लिए जिसकी व्यक्तिगत शली अभी अविकसित अवस्था में है। सर्जन से मिलने वाला आनन्द अब से अधिक महत्व रखता है, किन्तु जैसे ही उसकी निजी शैली उसकी प्रतिभा व प्रवृत्ति के अनुरूप परिपक्व होती हो जाती है। उसको कला के सामाजिक महत्व की ओर ध्यान देकर कार्य करना होगा। चित्रकला विषय का पाठ्यक्रम का बहुत अधिक महत्व है। इसका वर्णन विभिन्न विद्वानों के विचारों के आधार पर कर सकते है।

विद्यावती मलैया के अनुसार ''बालकों में कल्पना शक्ति होती है, इसको उचित विकास नि मिलने के कारण यह शक्ति प्रायः नष्ट हो जाती है। हमारा कर्तव्य है कि बालकों की इस अमूल्य शक्ति का उचित विकास करने में हम उसकी सहायता करें। कल्पना शक्ति में ही उनके भविष्य के जीवन के लिए कला तथा शिल्प शिक्षण का बड़ा योगदान होता है, अतः उसके उचित शिक्षण की व्यवस्था शालाओं में आवश्यक है।'' **विद्यावती मलैया** के विचारों से स्पष्ट होता है कि चित्रकला के माध्यम से बालकों की कल्पना शक्ति का विकास संभव हैं। इसके साथ ही आपने लिखा है कि विद्यालय में बालकों के लिए कला शिक्षण की उचित व्यवस्था होना आवश्यक है। **टर्नर** महोदय का विचार है कि ''मनुष्य की कोई कृति जो जनसाधारण तक को अपनी ओर आकृष्ट कर ले, कला है।'' उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चित्रकला विषय के अध्ययन द्वारा सम्पूर्ण विकास में महत्वपूर्ण स्थान हो। चित्रकला विषय के शिक्षा निम्न उद्देश्य प्राप्त किये जा सकते हैं–

(1) मानसिक शक्तियों का विकास – चित्रकला शिक्षा द्वारा मानसिक शक्तियों के विकास, कल्पना शक्ति, स्मृति, निरीक्ष्ज्ञण शक्ति, स्वतंत्र चिन्तन शक्ति, तुलनात्मक शक्ति, आत्म प्रकाशित शक्ति तथा आत्म निर्णय शक्ति जैसी महत्वपूर्ण शक्तियों का समुचित प्रकार की शक्तियों को विकसित करना चाहिए। ललित कला का आधार ललित कलाएं होती हैं। उन्हें उपयोग का रूप देकर उपादेय कल्पना का विकास कर सकते हैं।

(2) बौद्धिक विकास – बौद्धिक शक्ति का विकास करने के लिए अनुभव प्रधान होते है। कला के माध्यम से यदि अनुभव प्राप्त किए जाए तो बौद्धिक विकास सरलता से हो जाता है। लेकिन अनुीाव स्वयं करके सीखने की आदत से होते हैं। अतः कला शिक्षण

द्वारा स्वयं करके सीखने की आदत उत्पन्न करनी चाहिए। जिससे बालक के अनुीाव बढ़े और बालक का बौद्धिक विकास हो। ''स्वयं करके सीखने'' के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करती है।

(3) मानव जीवन का महत्वपूर्ण अंग – कला वास्तव में मानव जीवन का मुख्य अंग है। कला जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने में सहायक है। यह आनन्द देने वाली एक ऐसी असीम शक्ति है जो कि सौन्दर्य पर आधारित रहती है। कला मानव की कल्पनाओं को मूर्त रूप देकर गति प्रदान करने में सहायक है। इस प्रकार के जीवन से एक क्षण के लिए भी अलग नहीं किया जा सकता है। यह धन संग्रह कर मानव जीवन के उत्थान में भी सहायक हैं। प्रागैतिहासिक कला में मानव चित्रों की सहायता से भी अपनी मनोभावनाओं को प्रकट किया करता था। आधुनिक काल में जीन के स्थापित मूल्यों में परिवर्तन का जो आधुनिक युग प्रारम्भ हुआ। उसने कला परम्परा को भी प्रभावित किया।

(4) मानव संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग – प्रत्येक काल की मानव संस्कृति हमें कला के निर्मित चित्रों द्वारा देखने को मिलती है। आदिकला में मानव, वेशभूषा, खान–पान, रहन–सहन आदि सभी कला के द्वारा ज्ञात होते है। मध्ययुगीन संस्कृति की छाप उस समय की चित्रकारी से मिलती हैं। इसी प्रकार आधुनिक युग की प्रगति, त्यौहार, पहनावा, रीति रिवाज आदि हमें कला के द्वारा दृष्टिगत हो रहा है। अतः स्पष्ट है कि कला ही प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक ही मानव संस्कृति को जानने का एकमात्र साधन है।

(5) औद्योगिक/व्यापारिक महत्वपूर्ण – व्यापारिक क्षेत्र में कला का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। कपड़ों की रगाई, छपाई, पच्चीकारी, कढत्राई, बर्तनों की रूपाकारी, बुनाई का कला की सहायता से सुन्दरता प्रदान की जा रही है। बेत एवे बांस से बनी कुर्सी, टोरकी, ओप, मकान आदि कला के माध्यम से सुन्दरता का रूप प्रदान करते हैं। बढ़ई द्वारा कला की सहायता से दरवाजे, बर्तन खिलौने आदि को सुन्दर रूप प्रदान करते है। सोने चांदी के आभूषण, कश्मीर के कालीन शाल, लखनऊ का चित्रांकन का काम, वस्त्रों की रंगाई एवं छपाई के साथ अनेक प्रकार की डिजाइन आदि सभी वस्तुएं कला द्वारा ही सुन्दर उपयोगी एवं आकर्षक बनाई जाती है। व्यापारिक कला का क्षेत्र, प्रायः उत्पादनकों के विवरण तक सीमित हैं। इसका सबसे अधिक प्रसिद्ध रूप प्रेस के विज्ञापन, पोस्टर व्यापारिक साहित्य, शो–रूम आदि हैं। प्रदर्शनियों एवं वस्तुओं की पैंकिग से भी यह

सम्बन्धित हैं। औद्योगिक क्षेत्र में कला की आवश्यकता उद्योागें हेतु आवास उपलब्ध कराने की समस्या के कारण हुई। मील, कारखाने, फैकल्टी, पुल, स्टेशन, बांध, विद्युत उत्पादन के यंत्रों को सुरक्षित रखने वाले भवन आदि कला के उदाहरण हैं।

(6) जीविकोपार्जन का साधन – आज कला जीविकोपार्जन का साधन बन गई है। किसी समय कलाकार केवल कलाकृति का अवलोकन करके ही संतुष्ट हो जाया करता था। जिन्दगीभर कर्जदार रहता था। परन्तु आज चित्रकारों को अनूठी प्रतिभा के लिए सम्मानित किया जाता हैं। चित्रकला, कार्टून चित्रों, मकानों की सजावट, पत्र–पत्रिकाओं, किताबों आदि में चित्रण करके विज्ञापन चित्रण आदि से धन कमाकर अपने जीवन का भरण पोषण बड़ा सुखपूर्व कर रहा है। आज के समय में मकबूल फिदा हुसैन इसका एक जीता जागता उदाहरण है।

(7) आनन्द प्राप्ति का साधन – चित्रकार ही नहीं बल्कि साधारण जनता भी कलाकृतियों को देखकर प्रसन्न होती हैं। सौन्दर्य एवं आनन्द कला का प्राकृतिक गुण है। छोटे बच्चे से लकर वृद्ध व्यक्ति तक को फल खुशी प्रदान करती है।

(8) शारीरिक शक्तियों का विकास – कलाकारहाथ एवं पैरों दोनों से ही परिश्रम करता है। कलाकार खड़े होकर, बैठकर आकृतियां बनाता हैं। इस प्रकार उसका शारीरिक विकास होता है एवं कार्य करने की शक्ति बढ़ जाती है।

(9) अभिव्यक्ति का साधन – भाषाविहीन व्यक्ति भी कला के माध्यम से अपनी भाषाओ को अभिव्यक्त कर सकता है। कला की भाषा व्यंग्यात्मक भी हो सकती हैं। अतः मूक वाणी रूपी कला के माध्यम से भावों को सरलतापूर्वक प्रकट किया है। उन्हें चित्रकारी के माध्यम से एक पेज पर सुन्दरतापूर्वक प्रदर्शित किया जा सकता है।

(10) व्यक्तित्व निर्माण – आधुनिक मनोवैज्ञानिक मानव की जन्मजात प्रवृत्तियों को ही कलात्मक सृजन का आधार मानते हैं। पुरानी कहावत भी है कि पूत के पांव पालने में भी दिखाई दे जाते हैं। ये जन्मजात प्रवृत्तियां अनुकूल परिस्थितियां उत्पन्न करके व्यक्तित्व निर्माण में सहायक बनाई जा सकती हैं समस्त कलाकृतियों सेल की प्रवृत्ति को संतुष्ट करती हैं। इस प्रकार की संतुष्टि व्यक्तिगत निर्माण में सहयोग देती है। अतः कला शिक्षण में समय इस बात का विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि वह कला का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण है।

(11) नैतिकता का विकास – कलाकृतियों में किसी युग की क्षमता और संस्कृति का ज्ञान होता है। आज भी भारतीय संस्कृति की कलाकृतियाँ विभिन्न रूपों में हमें प्राप्त होती हैं। इन कलाकृतियों के अध्ययन में अपने देश की सांस्कृतिक विकास की झांकी मिलती है। कला के माध्यम द्वारा एक स्थान की संस्कृति दूसरे स्थान पर पहुँच जाती है। अतः हमें कला शिक्षण की संस्कृति दूसरे स्थान पर पहुँच जाती है। अतः हमें कला शिक्षण की संस्कृति दूसरे स्थान पर पहुँच जाती है। अतः हमें कला शिक्षण का उद्देश्य नैतिकता का विकास रखना चाहिए। कला शिक्षण में नैतिकता का समन्वय किया जाए तो नैतिकता का विकास होने से कला में भी निखार आयेगा और कला शिक्षण का उद्देश्य भी पूर्ण हो जायेगा।

(12) रुचियों का विकास – कला के माध्यम से आनन्द प्राप्त होता है। इसके साथ ही बालकों की विभिन्न रुचियों का विकास भी होता है। विभिन्न प्रकार की चित्रकारी से विभिन्न प्रकार के आनन्द का छात्र अनुभव करते हैं।

(13) क्रियाशीलता – चित्रण के आधार पर बालक में क्रियाशीलता के गुणों का विकास किया जाना संभव है। यह तो बालक का जन्मजात स्वभाव होता है कि वह क्रियाशील रहना पसन्द करता है। इसो कारण से बालकों को चित्रकला में कार्य में रत रखा जा सकता है। इससे बालकों में छिपी हुई शक्तियों का भी विकास होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

देवी प्रसाद, शिक्षा का वाहन, कला दिल्ली
शर्मा, प्रज्ञा, कला शिक्षण, जयपुर।
वैश्य आर.पी. चित्रकला शिक्षण, आगरा।
गोदीका, साधना, डॉ. सावित्री माथुर, कला शिक्षण, जयपुर।
शर्मा, माता प्रसाद, कला शिक्षा, शिक्षण जयपुर।
शोध श्री, जुलाई–सितम्बर, 2003